



केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन / KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

(Min. of HRD, Deptt. of Education, Govt. of India)

18-संस्थागत क्षेत्र / 18-Institutional Area

शहीद जीत सिंह मार्ग / Shaheed Jeet Singh Marg

नई दिल्ली - 110016 / New Delhi - 110016

Tel: 011-26856498, Fax No. 011-26514179

www.kvsangathan.nic.in

फा. सं. 110362/02/2017-18/केविसं(शै)/सीबीएसई परिणाम / 490-525 दिनांक : 14.06.2018

उपायुक्त

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

समस्त क्षेत्रीय कार्यालय तथा

प्राचार्य - केवि काठमाण्डू, तेहरान तथा मॉस्को

विषय :- कक्षा - X तथा XII के लिए सत्र 2018-19 हेतु कार्य योजना ।

महोदय / महोदया,

आपको विदित है कि सीबीएसई, कक्षा - XII के परीक्षा-परिणाम दिनांक 26.05.2018 को घोषित हो चुके हैं। इस परीक्षा में के.वि.सं से कुल 68615 विद्यार्थी उपास्थित हुए थे, जिनमें से 67089 विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए और इस वर्ष उत्तीर्णता का प्रतिशत 97.78 रहा था जबकि वर्ष 2017 में उत्तीर्णता का प्रतिशत 95.86% रहा था। इस वर्ष जवाहर नवोदय विद्यालयों सहित अन्य सभी विद्यालयी संस्थाओं की तुलना में के.वि.सं सर्वोच्च स्थान पर रहा। इस वर्ष 100% परीक्षा परिणाम देने वाले विद्यालयों की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है अर्थात् ऐसे विद्यालयों की वर्तमान में संख्या 490 है (जबकि वर्ष 2017 में यह संख्या 291 थी। 100% परिणाम देने वाले अधिकांश विद्यालयों के क्षेत्रीय कार्यालयों में - हैदराबाद (37), एर्णाकुलम (34) तथा जयपुर (32) शामिल हैं, इसके बाद अन्य क्षेत्रीय कार्यालयों में चंडीगढ़ (26), गुरुग्राम (24), चेन्नै (24), मुंबई (23), भोपाल (22) तथा भुवनेश्वर के नाम प्रमुख हैं। यह भी ध्यान देने योग्य है कि चंडीगढ़ तथा देहरादून जैसे संभागों ने अपनी स्थिति में सुधार किया है तथा अब वे एर्णाकुलम और बेंगलुरु क्षेत्रीय कार्यालयों की दृष्टि से एर्णाकुलम, चेन्नै, बेंगलुरु, मुंबई तथा हैदराबाद उच्च स्थान पर निरंतर कायम हैं अर्थात् वर्ष 2017 में पीआई जो 58.64% था इस वर्ष बढ़कर 61.27% हो गया है। कक्षा XII के मेरिट सर्टिफिकेट हेतु पात्र छात्रों की संख्या (67089 का 1.5%) 1037 है।

2. सीबीएसई के कक्षा - X के परिणाम 29.05.2018 को घोषित हुए। के. वि. सं का उत्तीर्णता प्रतिशत 95.94% रहा, कक्षा -X में ग्रेड प्रणाली बंद करके अंक प्रणाली का यह पहला बैच है। इसमें भी एर्णाकुलम तथा बेंगलुरु क्षेत्रीय कार्यालयों ने बहुत ही अच्छा प्रदर्शन किया तथा 16 संभागों ने 95% से अधिक परीक्षा परिणाम दिया तथा 07 संभागों ने 95% से कम परिणाम कक्षा -X में दिए। कक्षा -X में पी.आई. 58.82 रही। इस वर्ष कक्षा -X में मेरिट सर्टिफिकेट प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की कुल संख्या (87679 का 1.5%) 1377 है। शिक्षा सत्र 2018-19 हेतु कक्षा -X के विद्यार्थियों के प्रदर्शन में गुणवत्ता तथा परिमाणात्मकता की दृष्टि से सुधार करने हेतु प्रभावी कार्यनीति बनाने पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए अब उचित समय है।

3. यद्यपि, सभी संबंधित विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों, प्राचार्यों, सहायक आयुक्तों तथा उपायुक्तों द्वारा इस सफलता के लिए उत्सव मनाने तथा बधाइयों का सुअवसर है, तथापि, हमें इस पर आत्मसंतुष्टि नहीं

कर लेनी चाहिए। सभी उपायुक्तों तथा उनकी टीम अपने उत्कृष्ट परिणामों के कारकों की पहचान करें तथा भविष्य में अधिक अच्छा प्रदर्शन के लिए रणनीति भी तैयार करें। इसके साथ-साथ जिन क्षेत्रों में अच्छा नहीं कर सके उनके कारणों का पता लगाया जाए तथा वर्ष 2018-19 हेतु सुव्यवस्थित कार्य योजना तैयार की जाए।

04. यद्यपि यह कार्य इतना सरल नहीं है तथापि हम अपने सीमित संसाधनों तथा अधिकारियों / कर्मचारियों की प्रतिभाओं का भरपूर उपयोग करते हुए परीक्षा परिणामों की गुणवत्ता और संख्या में और बेहतर सुधार के लिए कार्य योजना तैयार करें। इस कार्य के लिए हमारे पास सुयोग्य, समर्पित एवं कर्मठ स्टाफ जैसे - प्राचार्य, सहायक आयुक्त तथा उपायुक्त जैसे मानव संसाधन उपलब्ध हैं। तथापि, कुछ बिन्दुओं का उल्लेख इस प्रकार से है :-

#### 4.1 विश्लेषण तथा कार्ययोजना :-

ग्रीष्मावकाश के बाद जैसे ही विद्यालय खुलता है, तब आपको प्रत्येक स्तर पर अति सूक्ष्म विश्लेषण करना चाहिए कि जो कमियाँ अथवा पूर्व में त्रुटियाँ पहले हुईं उनकी पुनरावृत्ति न हो। वरिष्ठ तथा कनिष्ठ शिक्षकों, स्नातकोत्तर शिक्षकों तथा प्रशिक्षित स्नातक शिक्षकों के साथ ही उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों तथा इतना अच्छा प्रदर्शन न करने वाले शिक्षकों के बीच बेहतर सहयोग स्थापित करने के उद्देश्य से अल्प अवधि की कार्यशालाएँ आयोजित की जा सकती हैं। शिक्षक, प्राचार्य तथा सहायक आयुक्त इस संबंध में कार्य योजना तैयार कर सकते हैं जिसे समेकित कर 15 जुलाई, 2018 तक इस कार्यालय में प्रस्तुत कर दिया जाना चाहिए। उपायुक्तों के सम्मेलन के दौरान भी इसका विश्लेषण प्रस्तुत करने के लिए अनुरोध किया जा सकता है। यह अपेक्षा भी की जाती है कि प्राचार्यों के सम्मेलन के दौरान इस पर विस्तार से चर्चा की जाए।

#### 4.2 पर्याप्त समय पहले कार्ययोजना / रणनीति बनाना :-

सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों की सफलता की कहानी प्रायः की जाती है, परंतु इसके साथ-साथ अच्छा प्रदर्शन न करने वाले विद्यालयों के बारे में भी पहले से ही आभास हो जाता है। अतः प्रत्येक स्तर पर पर्याप्त समय पूर्व कार्य योजना विकसित की जानी चाहिए। अनुरोध है कि जुलाई माह के अंत तक शिक्षकों को अपने सभी विद्यार्थियों की पहचान कर पढ़ाई में श्रेष्ठ तथा कुछ मंद गति से समझने तथा सीखने वाले विद्यार्थियों अर्थात् जिन पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है, का पता लगा लेना चाहिए। इसी तरह प्राचार्यों, सहायक आयुक्तों तथा उपायुक्तों को भी प्रभावी रूप से क्रियान्वित करने हेतु विषयवार तथा विद्यालयवार विशिष्ट रणनीति विकसित करनी चाहिए।

#### 4.3 स्पाइरल शिक्षण प्रणाली :-

यह पाया गया है कि शिक्षक प्रायः एक बार में ही संपूर्ण पाठ को पूरा कर लेते हैं। परंतु शिक्षण पद्धतियों में इस विधि से पठन-पाठन का निषेध बताया गया है इससे शिक्षण तथा परीक्षण के बीच बहुत बड़ा अंतर आ जाता है। सामान्यतया विद्यार्थी एक ही बार में सभी आगत नवीन ज्ञान को आत्मसात करने में समर्थ नहीं होते। इसलिए यह सलाह दी जाती है कि शिक्षक को प्रारम्भ में किसी पाठ विशेष के मुख्य बिन्दुओं की व्याख्या करने के लिए अलग-अलग कुछ कालांशों का प्रयोग करना चाहिये। विद्यार्थियों द्वारा परस्पर चर्चा, परिचर्चा, प्रयोगात्मक कार्य अथवा गृह कार्य इत्यादि उन मुख्य विषय के बारे में ही अर्थात् सीमित मात्रा में दिए जाने चाहिए। कुछ सप्ताह के बाद उसी माध्यम के विवरणों को विस्तार में दूसरे दौर में लिया जा सकता है। कुछ महत्वपूर्ण तीसरे दौर में लेते हुए विद्यार्थियों की भूमिका में अभिवृद्धि की जा सकती

है। इस प्रकार उच्च स्तर की ओर अग्रसर होते हुए सोच के उनके कौशल को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ा जा सकता है तथा प्रश्न-उत्तर के सत्रों की व्यवस्था भी की जा सकती है।

#### 4.4 लेखन अभ्यास :-

चरणबद्ध योजना : यह देखा गया है कि कई विद्यार्थी परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं, जबकि वे उस विषय-विशेष की संकल्पना को अच्छी तरह जानते होते हैं। इसका कारण यह होता है कि वे तेजी से तथा स्पष्ट रूप से लिख नहीं पाते हैं। इस प्रकार परीक्षा में उनके सभी प्रश्न हल नहीं हो पाते हैं। परीक्षा प्रबंधन का मूल मंत्र लेखन है। अतः अध्यापकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों द्वारा लेखन कार्य का अभ्यास चरणबद्ध तथा योजनाबद्ध तरीके से करवाएँ और यह अवधि प्रारम्भ में एक घंटे और बाद में तीन घंटे तक की हो सकती है। उन्हें अर्धवार्षिक परीक्षा से लेकर वार्षिक / बोर्ड परीक्षा होने तक कई बार डमी परीक्षाएँ देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

#### 4.5 उपचारी अभ्यास :-

यह भी देखा गया है कि त्रुटि विश्लेषण उपेक्षित क्षेत्रों में से एक है अर्थात् विद्यार्थियों द्वारा बार-बार की जाने वाली गलतियों की भी पहचान की जानी चाहिए तथा प्रभावी कार्य योजना द्वारा उन्हें दूर किया जाना चाहिए ताकि कोई विद्यार्थी उन गलतियों को पुनः न करें।

#### 4.6 विद्यार्थियों तथा उनके अभिभावकों के साथ काउंसलिंग:-

प्राचार्य तथा शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों तथा उनके अभिभावकों को समय-समय पर काउंसलिंग की जानी चाहिए ताकि उनके बीच उनके लक्ष्य, अध्ययन-अध्यापन और किसी अन्य विषय पर कोई विरोध न हो।

#### 4.7 कैरियर संबंधी परामर्श तथा मार्गदर्शन: -

आवश्यकता तथा रूची द्वारा अधिगम को सरल एवं सुगम बनाया जा सकता है अर्थात् शिक्षण का समुचित परामर्श तथा मार्गदर्शन के द्वारा विद्यार्थी बाधाओं के बावजूद अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अभिप्ररित होंगे।

#### 4.8 विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा प्राचार्य द्वारा लक्ष्य निर्धारण कर कार्य योजना बनाना:-

यदि विद्यार्थी अपना लक्ष्य स्वयं निर्धारित करते हैं तदनुसार अपनी कार्ययोजना बनाते हैं तो शिक्षकों के लिए उनका मार्गदर्शन करना काफी सरल एवं सुगम हो जाता है। प्रत्येक शिक्षक को उनके लक्ष्य प्राप्ति के लिए सहायता एवं मार्गदर्शन करना चाहिए।

#### 4.9 अधिगम के लक्ष्य को परिणाम प्राप्त करने पर बता देना:-

अधिगम के लक्ष्य की प्राप्ति से निश्चित रूप से अच्छे अंक प्राप्त होंगे। कक्षाओं में समय-समय पर पाठ/अध्याय इत्यादि के लिए जाने वाले टैस्ट अथवा यूनिट परीक्षा या अर्धवार्षिक परीक्षा के दौरान प्राप्तांकों पर अत्यधिक बल नहीं देना चाहिए अर्थात् अधिगम के लक्ष्यों/परिणामों में गिरावट को गंभीरता से लेते हुए उनका तत्काल समुचित समाधान अनिवार्य है।

#### 4.10 अधिगम हेतु प्रोत्साहित करना:-

अभिभावकों अथवा शिक्षकों द्वारा अधिगम/ शिक्षण कार्य में विद्यार्थियों के अत्यधिक सहयोग करने से उनकी प्रगति और क्षमता निर्माण में अपने कार्यों को करने के लिए सहायता नहीं मिलती है। अपितु उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए शिक्षकों द्वारा इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए।

4.11 निरंतर सत्यापन:-

इस प्रकार जो भी योजनाएं, लक्ष्य या उपलब्धियां निर्धारित की गई हो, वे सभी लिखित रूप से होनी चाहिए तथा उनका नियमित रूप से सत्यापन तथा विश्लेषण किया जाए। सभी उपायुक्तों को यह अवश्य सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी संबंधित प्रगति हेतु निरंतर मॉनीटरिंग की आदत डालें।

4.12 निम्न तीन अवयवों का इस्टिम प्रयोग :-

1. विद्यालय योजना
2. पर्यवेक्षण
3. विद्यालय मूल्यांकन

प्राचार्य को निदेशित किया जाना चाहिए कि वे अपनी योजना अग्रिम रूप से तैयार करें तथा वर्षभर उसे लागू करें। सहायक आयुक्तों को सलाह दी जाए कि वे शिक्षकों/प्राचार्यों द्वारा बनाई गई योजनाओं के कार्यान्वयन हेतु विद्यालय को निर्देश दें तथा विद्यालय की नियमित रूप से सहायता तथा मार्गदर्शन करें। इसके साथ-साथ उपायुक्तों द्वारा भी इस आशय की मॉनीटरिंग की जाए।

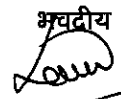
4.13 तीव्र वृद्धि विद्यार्थियों पर उचित ध्यान देना:-

उत्तीर्णता प्रतिशत की अभिवृद्धि की दौड़ में, हम प्रायः अपने तीव्र बुद्धि विद्यार्थियों की अनदेखी कर देते हैं अतः यह सलाह दी जाती है कि तीव्र विद्यार्थियों की पहचान आरंभ में ही की जानी चाहिए तथा उन्हें विभिन्न तरीकों जैसे- प्रोत्साहित करना, अतिरिक्त शिक्षण कार्य, सहायक सामग्री उपलब्ध करवाना तथा उन्हें उच्च स्तरीय चिंतन संबंधी परिस्थिति के प्रति अवगत करवाने हेतु अतिरिक्त कार्य दिए जाने चाहिए।

4.14 प्रेरणा:-

अध्ययन, अध्यापन, अधिगम इत्यादि को सरल एवं सुगम बनाए रखने के लिए निरंतर प्रेरणा प्रदान करना ही एकमात्र प्रमुख आधार है। इसलिए विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा प्राचार्यों को निरंतर प्रेरित करने और अपने अध्ययन- अध्यापन कार्य को स्वेच्छा से करने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए।

5. इसके अतिरिक्त हम आपसे निकट भविष्य में आयोजित होने वाले उपायुक्तों के सम्मेलन में कुछ सफलताओं और दुर्बल पक्षों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

भवदीय  


(य. प. खवाड़े)

अपर आयुक्त (शैक्षिक)

प्रतिलिपि :-

1. आयुक्त, केविसं के निजी सचिव को आयुक्त महोदय की सूचना हेतु प्रेषित।
2. समस्त संयुक्त आयुक्त, केविसं (मुख्या.) को सूचनार्थ।
3. निदेशक, समस्त, जैड. आई. ई. टी, केविसं को सूचनार्थ।



केन्द्रीय विद्यालय संगठन / KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

(Min. of HRD, Deptt. of Education, Govt. of India)

18-संस्थागत क्षेत्र / 18-Institutional Area

शहीद जीत सिंह मार्ग / Shaheed Jeet Singh Marg

नई दिल्ली - 110016 / New Delhi - 110016

Tel: 011-26856498, Fax No. 011-26514179

www.kvsangathan.nic.in

F.110362/02/2017-18/ KVS(Acad)/CBSE Result / 490-528 Dated 14.06.2018

Deputy Commissioner  
Kendriya Vidyalaya Sangathan  
All Regional Offices and  
Principal KV Kathmandu, Tehran & Moscow.

**Subject: Action Plan for Class X and XII for the Session 2018-19.**

Madam/Sir,

CBSE Class XII Results have been declared on 26.05.2018. The total 68615 students from KVS appeared out of which 67089 passed leading to 97.78% pass in class XII in comparison to 95.86% in 2017. KVS is at the top this year among all the school systems including Jawahar Navodaya Vidyalayas. The number of Kendriya Vidyalayas who produced 100% result has improved considerably i.e. 490 (291 in 2017). Some of the Regions that have large number of Kendriya Vidyalayas with 100% result this year are: Hyderabad (37), Ernakulam (34) and Jaipur (32) followed by Chandigarh (26), Gurgaon (24), Chennai (24), Mumbai (23), Bhopal (22) and Bhubaneshwar (21) among others. It is interesting to note that the Regions like Chandigarh and Dehradun have improved their positions and are among top 5 Regions alongwith Ernakulam and Bangalore. In terms of quality, Ernakulam, Chennai, Bangalore, Mumbai and Hyderabad have maintained their top positions. There is a significant improvement in quality dimension of results as **PI is 61.27** as compared to 58.64 in 2017. The total no. of students in Class XII eligible for Merit Certificates (1.5% of total 67089) is 1037.

2. Class X results of CBSE were announced on 29.05.2018. The KVS has mustered 95.94 pass% and it is the first batch of marking system after switch over from grading system in Class X. Again Ernakulam and Bengaluru Regions have done extremely well and 16 Regions have produced above 95% in Class X. 07 Regions have produced below 95%. The PI in Class X has been **58.82**. The total no of students getting Merit Certificates (1.5% of total 87679) in Class X for this year is 1377. Therefore, it is high time to focus and evolve effective strategy to improve the performance of students of Class X qualitatively and quantitatively from the session 2018-19.

3. Though it is an occasion to celebrate and congratulate all the stakeholders, students & parents, Teachers & Principals and ACs & DCs for their superb performance yet it is the time for saving ourselves from falling into the trap of complacency. It is high time that DCs and their team identify the factors for their excellent results and make strategies for training the teachers for even better performance. At the same time there is a similar need to scrutinize the reasons for poor performance in some pockets and make a viable Plan of Action for the year 2018-19.

4. It is a huge task but we have been bestowed with rare resources and opportunities of human engineering. Let us brainstorm, analyze and make effort to have a roadmap in order to improve our performance further in terms of quality as well as quantity. We are aware of capabilities of Principals, ACs and DCs and their acumen and dedication for the cause of quality education. However, a few action points are suggested as under:

**4.1 Analysis and Action Plan:** Just after the school re-opens after summer vacation/break you may like to make micro analysis at every level so as to ensure that the same lacunae do not surface again. Short duration workshops can be organized for better synergy among the Senior and Junior Teachers, PGTs and TGTs as well as High performers and Not So High Performers. The teachers, the Principals and the Assistant Commissioners may make action plans in this regard which can be consolidated and submitted to this office by 15<sup>th</sup> July, 2018. They may also be requested to discuss and submit their analysis and action plan during the Deputy Commissioners' Conference. It is also expected that the same will be deliberated during the Principals' Conference in larger details.

**4.2 Strategies for early alarm:** The success stories of the best performing schools have one common thing – they are aware of the threats much earlier than those who do not perform well. An alarm system, therefore, has to be developed at every level. It is requested that by July end the teacher must identify the bright ones and also those who need more attention in terms of understanding and application. Similarly, Principal, Assistant Commissioner and the Deputy Commissioner should evolve subject and school specific strategies for effective execution.

**4.3 Spiral Teaching:** It has been observed that usually teacher completes one chapter in one go. The best teaching practices prohibit this methodology since the gap between the teaching and testing is very big. Students in general are not able to comprehend all the inputs at a time. Therefore, it is advised that the teacher should use a few periods only to explain the major areas of the topic initially. Interact with the students, practical work or home work should be limited to those major areas only. Similarly other chapters of the unit should be dealt with. After a few weeks minor details of the same chapter can be taken

up in detail in the second round. During the third round, students role can be increased, higher order thinking skills can be taken care of and question answer sessions can also be thought of.

- 4.4 Writing practice - phase wise plan:** It has been observed that many students do not perform well in the exam even when they know the concept only because of their inability to write faster and legibly. They are unable to attempt all the questions. The secret of exam management is writing. Therefore, the teacher should encourage the students for doing writing practice in phases and in the planned manner starting from one hour duration to three hours duration in one go. They should be encouraged to take dummy examinations as many times as possible right from the half yearly examination stage upto the Annual/Board Examination.
- 4.5 Remedial Exercise:** Error analysis is one of the neglected areas. Similarly, frequently committed mistakes of the students should also be identified and classified with effective intervention strategies to ensure that no student commits those mistakes again.
- 4.6 Counseling of students and parents:** Students and parents both need to be counseled by Principal and teachers so that there should not be any conflict between them as far as their goals, study styles and other issues are concerned.
- 4.7 Career Counseling & Guidance:** The key to learning is developed by necessity and joy. Proper career counseling & Guidance will make the students motivated enough to pursue their goals despite odds.
- 4.8 Target setting, plan of action and milestone setting by students, Teachers and Principals:** If the students themselves set their targets, develop their plan of action and milestones, it will be easy for the teachers to further guide and facilitate them. Every teacher should assist the students for doing so by providing necessary inputs.
- 4.9 Emphasis on Attainment of Learning Outcomes:** Attainment of learning outcomes will certainly ensure better marks but not vice versa. During the class tests, unit tests, half yearly tests, marks should not be over emphasized. However deficit in learning outcomes must be seriously dealt with.
- 4.10 Encouragement of Learning:** Too much support either from the parents or teachers do not help the students in their journey of growth and capacity building. Teachers have to desist from spoon feeding the students. They should always encourage learning by the students which can be followed up by the teachers.
- 4.11 Constant verification:** Whatever be the planning, goals or milestones they will remain on paper until and unless they are constantly verified and analyzed. All the DCs must ensure that all the stakeholders develop this habit of consistent watch on their progress.

#### 4.12 Optimum utilization of three tools:

- i. **Vidyalaya Plan**
- ii. **Supervision**
- iii. **Vidyalaya Assessment**


The Principal should be directed to plan in advance and implement the same throughout the year. The AC should be advised to direct the schools in the light of the plans made by the teachers/ Principals and assist the Vidyalaya at regular intervals by giving them necessary direction and guidance which can be monitored by the DCs.

**4.13 Proper attention on bright learners:** In our pursuit of meeting pass %age, we often lose sight of our brightest learners. It is, therefore, advised that the bright ones should also be identified quite early and necessary facilitation be provided to them in different manners e.g. encouragement, supply of Student Support Material and exposing them to high order thinking situations.

**4.14 Motivation:** In the strenuous journey of studying, teaching, learning and remaining consistent with their regular study hours, motivation is the only driving force. Hence, efforts be made to keep the students, teachers and Principals highly motivated and willing performers.

5. I look forward to seeing you during the Deputy Commissioners' Conference where these issues can further be discussed and deliberated with success stories from your side as well as reasons for low performance.

Yours sincerely

  
14.6.18

(UN Khaware)

Additional Commissioner (Acad.)

Copy to:

1. PS to Commissioner, KVS for information of the Commissioner.
2. All Joint Commissioners, KVS (HQ) for information.
3. Director, ZIETs for information.
4. Assistant Director, Rajbhasha for translation.